।। अथ विष इम्रत को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ विष इम्रत को अंग लिखंते ||

|| कुंण्डल्या ||

झूठो अन केसो हुवो || सो बिध कहि ये मोय ||
कोण कोहो ओगण मुख मे || सो गुण कहिये जोय ||
सो गुण कहीये जोय || काँय आ अेब लगाई ||
कहो ग्यान सुण ब्यास || अरथ सागे मुज लाई ||
सुखराम क्हे ईम्रत तको || सो तो मुख में होय ||
झूठो अन केसो हुवो || सो बिध कहीये मोय || १ ||

झुठा अन्न कैसे होता है वह विधी मुझसे कहो । मुंह में क्या अवगुण व गुण है सो देखकर कहो । यह अेब क्यों लगाई है,इसका सही अरथ बतावो और वो ज्ञान कहो । जो कथा व्यासजी से सुणा है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की जो इमरत है वो तो मुंह में है । ||१||

मुख सूं थुथकी न्हाकियां || निजर को गुण जाय ||
सिध सुण देवे आसका || सोई फळ ऊपजे मांय ||
सोई फळ ऊपजे मांय || सरब के गुण मुख माई ||
जमी सरप अर जोख || के कवी चिड़ी कहाई ||
सुखराम कहे ग्यानी सुणो || करता सो मुख मांय ||
तुम झुठो अन क्हेत हो || सो किण गुण को हो आय || २ ||

मुंह से थुथकी डालने पर नजर लगी हो तो मिट जाती है । सिध्द अपने मुंह से जो कहता है वही फल मिल जाता है । सब के गुण मुंह मे ही है । जमीन पर सर्प रहता है और जोख पानी में रहती है । जोख के मुंह में ऐसा गुण है की शरीर मे जहाँ दर्द होता है,उस पर लगाने से दर्द को खींच लेती है,श्यामा चिडीया अपने मुंह से बोलकर शुभ अशुभ बता देती है । इसलिये आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की हे ज्ञानियो सुणो,कर्ता का नाम याने राम नाम भी मुंह से लेते है यानि मुंह में इतने गुण है और आप अन्न को झुंठा कहते हो तो किस गुण से कह रहे हो । ||२||

झूटे झूटे तूम केत हो || मुख मे झूट न होय ||
गुण ओगुण दोनू खरा || तामे फेर न कोय ||
ता मे फेर न कोय || बिष सोई हे मुख मांई ||
इम्रत भऱ्यो अपार || परख बिन जाणे नाही ||
सुखराम क्हे मुख सार हे || सब चीजां को जोय ||
झूट झूट तूम केत हो || मुख मे झूट न होय || ३ ||

मुंह मे झुठ है झुठ है ऐसा कहते हो सो मुंह में कोई झुंठ नहीं है । मुंह में अवगुण व गुण

दोनो है इसमे किसी तरह का फरक नहीं है । जिसको जहर कहते है वो भी मुंह में ही है । इमरत भी अपार मुंह में भरा हुआ है,उसको परख के बिना नहीं जानते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की सब चीजो का सार मुंह में है । ।।३।।

ग्यानी ध्यानी सब सुणो ।। मुख मे ओगुण होय ।।
मारकंड अमर भया ।। प्रसादी बळ जोय ।।
परसादी बळ जोय ।। नवळ कंचन अंग जोई ।।
दादू झेलर पीक ।। ब्रम्ह पायो कहुँ तोई ।।
सुखराम कहे बिप्र भया ।। हर मुख सूं के तोय ।।
ग्याणी ध्यानी सब सुणो ।। मुख मे झूट न होय ।। ४ ।।

ज्ञानी ध्यानी सब सुनो मुंह में यह गुण है । परसादी के बल से मारकंड्ये मुनी अमर हो गये । नेवला का शरीर पांड्वो के यज्ञ में सोनेका हो गया । दादूजी महाराज ने अपने गुरु के मुंह से पीक झेल कर सतस्वरुप बम्ह की प्राप्ती की । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की ब्राम्हणों की उत्पती ब्रम्हा जी की मुंह से हुयी है । ।।४।।

झूट झूट भोळा कहे ।। मुख मे झूटन होय ।।
किणियक मुख ईम्रत बसे ।। कांही एक बिष कहूं तोय ।।
कांही अेक बिष कहुं तोय ।। सरब तजीये नही भाई ।।
किणियक मुख सूं जाण ।। मुक्त फळ लगे मांई ।।
सुखराम कहे बिचार कर ।। आड न डारो कोय ।।
झूट झूट भोळा कहे ।। मुख मे झूट न होय ।। ५ ।।

भोले मनुष्य ही मुंह में झुंठ कहते है,मुंह में झुंठ नही है । कअीयोके मुंह में अमृत बसता है, किसी मुंह में जहर बसता है,सबको ही नहीं त्याग देना चाहिये । किसी के मुंह से ज्ञान सुनकर मोक्ष की प्राप्ती का फल पा लेते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की विचार कर कहता हुं किसी के आड मत दो । ।।५।।

सब दिन मुख मे ज्हेर नही ।। सब दिन अमी न होय ।।
किणी यक पुळ असमान सूं ।। ईम्रत आवे जोय ।।
ईम्रत आवे जोय ।। पेम सूं ऊतरे भाई ।।
ज्यूं मथन से काम ।। भग मुख पड़ियो जाई ।।
सुखराम दास या प्रख रे ।। जाणे बिरळा कोय ।।
सब दिन मुख मे ज्हेर नही ।। सब दिन अमी न होय ।। ६ ।।

मुंह में हर समय जहर व अमृत नहीं रहता है । कोई कोई सी पुल में आसमान से इमरत उतरता है,वह अमृत प्रेम से उतरता है । जैसे बिंद मैथुन से भग के मुंह में जा पड्ता है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की परीक्षा बिरले ही जानते है । ।।६।।

सरप रोस कर खाय रे ।। तो नर बचे न कोय ।।
खिज्याँ सूं बिष ऊतरे ।। ब्रेहेमंड सूं कहुं तोय ।।
ब्रेम्हंड सू कहूं तोय ।। रीत इम्रत ईण आवे ।।
जिण बिध रीजे संत ।। सिष सोई बिध लावे ।।
सुखराम दास ललफल कियाँ ।। सिष को काज न होय ।।
सरप रोस कर खाय रे ।। सो नर बचे न कोय ।। ७ ।।

सांप क्रोध करके मनुष्य को खाता है तो मनुष्य नहीं बचता है । क्रोध करने से जहर ब्रम्हंड से उतरता है । इमरत इस रीती से आता है जिस विधी से संत प्रसन्न होते है । शिष्य को वही कार्य करना चाहिये । उनकी बताई गई विधी से कार्य नहीं करना व त्रिगुणी माया के विधी से कार्य करना यह ललफल करना है । ललफल करने से परमपद नहीं मिलता है,इसप्रकार शिष्य का काज नहीं होता है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।७।।

।। इति बिष ईम्रत को अंग संपूरण ।।